कुम्भमेलोंमें कुछ साधुओंका पाखण्ड
(सन्तोंद्वारा अपेक्षित कार्य भी अन्तर्भूत)

अनुक्रमणिका

अध्याय १

कुम्भमेलोंके कुछ लांच्छनास्पद प्रकार !

अनुक्रमणिका

१. कुम्भमेलेमें कुछ साधु-सन्तोंका हिन्दू धर्मको कलंकित करनेवाला तथा 'सन्त' पदका अनादर करनेवाला आचरण ! **१४**

१ अ. कुम्भपर्वमें आनेवाले साधुओंमेंसे केवल २ प्रतिशत ही सच्चे साधु ! १४

१ आ. सर्वसाधारण व्यक्ति समान दोषयुक्त साधु ! १४

१ इ. सर्वत्र अस्वच्छता फैलाना १५

१ ई. मनमाने ढंगसे चिपकाए गए भित्ति-पत्रक १७

१ उ. ध्वनिप्रदूषण १७

१ ऊ. प्रसिद्धिलोलुपता १८

१ ए. धनका अपव्यय २३

१ ऐ. लोभी साधु २६

१ ओ. व्यसनाधीनता २९

१ औ. अहंकार ३०

१ अं. वादविवाद करनेवाले झगडालू साधु ! ३५

१ क. साधुओंके दुराचारके अन्य उदारहण ३७

१ ख. साधु-सन्तों के मध्य विद्यमान दूरियां ४०

१ ग. राष्ट्र तथा धर्म के प्रति उदासीन साधु-संत ४१

१ घ. सनातनके साधकोंको कुछ साधुओंके विषयमें हुए कटु अनुभव ४५

२. कुछ अखाडोंकी दुर्दशा ४९
३. कुछ नागा साधुओंकी दुर्दशा ५३
४. पेशवाईमें हुई अनुचित घटनाएं ५६
५. साधु-सन्तों की गुटबाजी और राजनीतिक पक्षोंसे उनके संबंधी ५९
६. कुम्भमेला और धर्माचार्यों की वर्तमान स्थिति के विषयमें सन्तोंके कथन ६१
७. प्रयाग कुम्भमेलेमें नियोजनका अभाव दर्शानेवाला संत-सम्मेलन ६१
८. अब धर्मस्थापनाके लिए अवतारी पुरुषको अवतरित होकर कार्य करनेकी आवश्यकता होना ६३
९. कुम्भमेलेका मूल उद्देश्य सफल होने हेतु साधु-सन्तोंका दायित्व ६६
* कुम्भमेलेका मूल प्रयोजन सफल होने हेतु साधु-सन्तोंद्वारा पहल करनेकी आवश्यकता !
१०. कुम्भपर्वको औचित्य बनाकर धर्माचार्य और सन्त-महन्त-धर्मशिक्षण, धर्मप्रबोधन, हिन्दू-संगठन व धर्मरक्षण, इन ४ सूत्रों के आधारपर संगठित होकर कार्य करें, यह ईश्वरसे प्रार्थना ! ६७

अध्याय २

कुम्भमेलेमें अनुभव हुए कुछ सकारात्मक सूत्र

अनुक्रमणिका

१. कार्यशील और आदर्श कार्य करनेवाले साधु-सन्त ६९
१ अ. कुम्भमेलेमें मिली हीरे-जडी सोनेकी अंगूठी उसके स्वामीतक शीघ्रातिशीघ्र पहुंचानेके लिए प्रयत्नशील वृद्ध बैरागी साधु ! ६९
१ आ. पूर्वाम्नाय पुरी गोवर्धनपीठके पूज्य स्वामी श्री निश्चलानंद सरस्वतीजी महाराज ७०
१ इ. छत्तीसगढ राज्यमें गोरक्षा एवं गोसेवा के माध्यमोंसे प्रयत्न करनेवाले पू. श्रीराम बालकदास महात्यागी महाराज ! ७०
१ ई. हिन्दू धर्मशास्त्रके प्रचारकी तीव्र इच्छा रखनेवाले वृंदावनके पूज्यश्री राघवदास महाराज ! ७१

१ उ. हिन्दुत्ववादी विचारधाराके पूज्यश्री रसियाबाबा ! ७१
२. सनातन संस्था और कुम्भमेला ७२
२ अ. कुम्भमेलेमें गो-हत्याके विषयमें चिन्तन-बैठक और उसमें सनातन संस्था व हिन्दू जनजागृति समिति का सहभाग ! ७२
२ आ. सनातन संस्था एवं हिन्दू जनजागृति समिति के संदर्भमें सन्तोंके उद्‌गार ७२
२ इ. प्रेमवश सनातनकी सहायता करनेवाले सन्त ७३
२ ई. प्रयागके (इलाहाबादके) कुम्भमेलेमें सन्तोंसे सीखनेके लिए मिले सूत्र ७५

भूमिका

कुम्भमेलेका अनन्य आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व है । इसमें आनेवाले ज्ञानी और तपस्वी साधु-सन्तोंके सत्संगसे श्रद्धालुओंमें भक्तिभाव बढता है । कुम्भमेला भक्तिका मेला है, जिसमें करोडों श्रद्धालु आते हैं । इसलिए इसमें हिन्दुओंकी एकताके भी दर्शन होते हैं । किन्तु गत कुछ वर्षोंमें प्रयागराज, हरद्वार (हरिद्वार), उज्जैन और त्र्यंबकेश्वर-नासिकमें लगे कुम्भमेलेके पर्वकालमें हृदयविदारक स्थिति दिखाई दी । इस ग्रन्थमें इसी दुखद स्थितिका वर्णन किया गया है ।

साधु-सन्त अर्थात वैराग्यके सगुण रूप ! स्पर्धा, ईर्ष्या, तुलना, दिखावा, लोकेषणा से अलिप्त जीव ! भौतिक जीवन त्यागकर मान-सम्मान, धन-सम्पत्ति से अलिप्त रहना, वास्तविक साधु-सन्तकी विशेषता है; किन्तु कुम्भमेलेमें इसके ठीक विपरीत दृश्य दिखाई दिया । आपसी ईर्ष्या और श्रेष्ठता की स्पर्धामें अनावश्यक रूपसे शक्ति, समय और पैसा व्यय होता दिखा । तात्पर्य यह कि कुम्भक्षेत्रके इन तथाकथित साधु-सन्तों में व्यावहारिक जीवनके दोष विशेष रूपसे दिखाई दे रहे थे ।

सर्वसाधारण लोग मानते हैं कि 'साधु, अर्थात धर्मज्ञानी, जनताको धर्म समझानेवाला व्यक्ति है ।' इसीलिए भगवा वस्त्रधारी साधुओंके प्रति हिन्दुओंके मनमें आदरयुक्त स्थान है । ऐसी स्थितिमें समाजके लिए उनका आचरण तथा धर्मसम्बन्धी दृष्टिकोण आदर्श ही होना चाहिए; किन्तु कुम्भके पर्वकालमें उनमें धर्मके प्रति घातक प्रवृत्तियां देखी गईं । अनुकरणीय और पूज्य लोगोंके अनुचित आचरणका समाजपर बहुत बुरा प्रभाव पडता है । साधारण व्यक्तिसे अज्ञानवश हुआ बडा अपराध भी क्षमा करनेयोग्य होता है; परन्तु साधुवेषधारी ज्ञानियोंसे और सामाजिक तथा धार्मिक मान्यता प्राप्त करनेके इच्छुक लोगोंसे होनेवाली साधारण चूक भी बडा धर्मद्रोह मानी जाती है !

'साधुका अर्थ है, 'त्यागी' । साधुओंको समाज आदरकी दृष्टिसे देखता है । ऐसी स्थितिमें जिनके आचरणसे लोभ, आसक्ति और लोकेषणावश ईर्ष्याका प्रदर्शन होता हो तथा जो अच्छा कार्य करनेवालोंके मार्गमें जानबूझकर बाधाएं खडी करते हों, उनसे कौन-सा धर्मकार्य होगा ? प्रस्तुत ग्रन्थमें, समाजके लिए लांछनास्पद तथा 'सन्त' पदका अनादर करनेवाले तथाकथित साधु-सन्तोंके आचरणका वर्णन किया गया है ।

कुम्भमेलेके मुख्य केन्द्रबिन्दु, साधुओंके धर्मसंबंधी हानिकारक आचरणका लाभ धर्मद्रोही और प्रसिद्धिमाध्यम उठा रहे हैं । कुम्भमेलेकी पृष्ठभूमिपर पूरे विश्वमें हिन्दू धर्मकी महान परंपराओंके साथ ही हिन्दुओंको अत्यंत विकृत एवं निकृष्ट रूपमें दर्शाया जाता है । अतः कोई भी उठकर हिन्दू धर्मकी निंदा करता है । एक समय धर्मसत्ताके अधीन कार्य करनेवाली राजसत्ताके स्थानपर अब 'दुर्जन व अधर्मी नेताओंकी सहायतासे चलनेवाली अशोभनीय धर्मनीति', ऐसा स्वरूप कुम्भमेलेको प्राप्त हो रहा है । इसका वर्णन इस ग्रन्थमें किया है ।

अन्य धर्मियोंके उत्सवोंमें सुविधाओंका वर्षाव करनेवाला प्रशासन भी अपने हिन्दूद्वेषकी झलक इस कुम्भमेलेके आयोजनमें दिखाता है और इसकी दुखद स्थितिको और दुर्भाग्यपूर्ण बनाता है । हिन्दुओंमें संगठनके अभाववश प्रशासन और प्रचारमाध्यमोंको धर्मकी आलोचना करनेका स्वर्णिम अवसर मिलता है ।

इस स्थितिके लिए दोषी केवल साधु नहीं, अपितु हिन्दू समाज भी है । इसपर पूरे हिन्दू समाजको अन्तर्मुख होकर विचार कर कुम्भमेलेकी सर्व विकृतियां एवं दोष नष्ट करनेके लिए उचित प्रयास करने चाहिए । समाजको केवल आदर्श कुम्भमेले नहीं, अपितु उसके माध्यमसे समाजकी सात्त्विकता बढानेवाले हिन्दू धर्मकी महानता भी दिखनी चाहिए, तभी यह ग्रन्थ लिखनेका उद्देश्य सार्थक होगा ।

साधु-सन्तों सहित सामान्य हिन्दुओंसे भी हिन्दू धर्ममें आई दुष्प्रवृत्तियां, विकृतियां और दोष दूर करने एवं धर्मका पुनरुत्थान करने हेतु संगठित प्रयास हों, यह ईश्वरचरणोंमें प्रार्थना !

- संकलनकर्ता